महामत कहे ए मोमिनों, ए सुख अपने अर्स के।
एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह सुख अपने परमधाम के हैं। यदि अपनी भलाई चाहते हो तो इन सुखों को एक पल के लिए मत छोड़ो।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ९७८ ॥

पार जोए के बन खूबी
(जमुनाजी के किनारे पर वनों की शोभा)

पार जमुना जो बन, इसी भांत दिल आन।
दोरी बंध बन ले चल्या, डारी सब समान।। १ ।।

जमुनाजी के किनारे पर वनों की शोभा भी इसी तरह है। सभी पेड़ एक सीध में तथा सबकी डालियां एक समान शोभा देती हैं।

जहां लग नजरों देखिए, तहां लग एही बन।
जित जमुना तले आए मिली, देखो किनार एही रोसन।। २ ।।

जहां तक नजर से देखें इन वृक्षों की शोभा दिखाई देती है। यह पुल महल के किनारे तक शोभा देते हैं।

दोऊ किनारे बन सोभित, चल्या जल जमुना ले।
रोसनी न माए आकास लों, क्या कहे जुबां नूर ए।। ३ ।।

दोनों किनारों पर वन की शोभा है जिनका तेज आकाश में नहीं समाता। यहां की जबान उसका कैसे वर्णन करे?

चल्या अछर के मोहोल लों, एकल छत्री नूर।
जैसा बन इत धाम का, ए भी तैसाही जहूर।। ४ ।।

इस पुखराजी रोंस के वनों की छतरी की शोभा अक्षरधाम तक जाती है। जैसी शोभा इस तरफ है वैसी ही उस तरफ है।

मोहोल के पीछे फिरवल्या, जहां लों पोहोंचे नजर।
सब ठौरों एही रोसनी, कहां लों कहूं क्यों कर।। ५ ।।

यह पुखराजी रोंस के पेड़ अक्षरधाम के चारों तरफ घेरकर आए हैं और सब जगह इनकी ऐसी ही शोभा है।

सुन्दर दरवाजा नूर का, रोसन झरोखे गिरदवाए।
नव भोम बिराजत, मोहोल रोसन रहे छिटकाए।। ६ ।।

अक्षरधाम का नूरी दरवाजा, परिकरमा के झरोखे तथा नवों भोम की शोभा भी अति सुन्दर है।

Nijanand App

इसी भांत है चांदनी, ऐसी कांगरी ऊपर।
इतथें जब देखिए, तब आवत धाम नजर।।७।।

अक्षरधाम की चांदनी और कंगूरे भी बड़े सुन्दर हैं। इससे जब सामने देखें तो रंग महल नजर आता है।

दोऊ दरवाजे साम सामी, सोभित दोरी बंध।
नूर नूरबिलंद की, जुबां कहा कहे ए सनंध।।८।।

अक्षरधाम के तथा रंग महल के दरवाजे एक सीध में हैं। अब अक्षर और अक्षरातीत धाम की हकीकत का वर्णन यहां की जबान कैसे करें?

एकल छाया बन की, जहां लों नजर देखत।
तोलों फेर सब देखिया, सोभा सब में अतंत।।९।।

वृक्षों की छतरी की शोभा एक समान है। जहां तक नजर जाती है यह शोभा सबसे अधिक दिखाई पड़ती है।

खूबी इन भोम बन की, जानों फेर फेर देखूं धाए।
देख देख के देखिए, तो नजर न काढ़ी जाए।।१०।।

इस भूमि के वनों की शोभा देखने के लिए लगता है दौड़-दौड़कर जाऊं और देखती ही रहूं। वहां से नजर हटाने की इच्छा नहीं होती।

सब एक बन छांहेड़ी, श्री धाम के गिरदवाए।
गिरदवाए जमुना तलाव के, नूर अछर पोहोंचे आए।।११।।

सब जगह वन के पेड़ों की छाया है। रंग महल के चारों तरफ, जमुनाजी के चारों तरफ व हौज कौसर ताल के चारों तरफ यह पेड़ घेरकर अक्षरधाम तक जाते हैं।

बन नूर के फिरवल्या, एही छाया है तित।
इन जुबां ए बरनन, क्यों कर करूं सिफत।।१२।।

यह वृक्ष अक्षरधाम के चारों तरफ भी इसी तरह की छाया करते हैं। इस जबान से इसका वर्णन कैसे करूं?

अनेक पसु इन बन में, अनेक हैं जानवर।
खेलत बोलत गून्जत, करत चकोसर।।१३।।

इन वनों में अनेक तरह के पशु, जानवर खेलते, बोलते, गूंज करते हैं और शोरगुल करते हैं।

कई खूबी पसु केसन की, कई खूबी जानवर पर।
कई सुन्दर सोभा नकस, ए जुबां कहे क्यों कर।।१४।।

यहां के पशुओं के बालों की शोभा निराली है और कई तरह की खूबी, जानवरों के परों की है। कई तरह की सुन्दरता उनकी नक्शकारी की है। इनका यहां की जबान से वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

कई मुख बानी बोलत, अतंत मीठी जुबान।
अति सुन्दर हैं सोहने, क्यों कर कीजे बयान।। १५ ।।

यहां के जानवर मीठी जबान से मधुर वाणी बोलते हैं। देखने में अति सुन्दर सुहावने हैं। इसकी हकीकत का बयान कैसे करें?

कई खेलत करत लड़ाइया, कई कूदत कई फांदत।
उड़के कई देखावहीं, कई बानी बोल रिझावत।। १६ ।।

कई जानवर लड़कर खेलते हैं, कई कूदते हैं, कई नाचते हैं, कई उड़कर दिखाते हैं और कई वाणी बोलकर रिझाते हैं।

पसु पंखी सब बन में, घेरों घेर फिरत।
कई तले कई बन पर, कई विध खेल करत।। १७ ।।

इन वनों में पशु-पक्षी चारों ओर घूमते हैं। कई वनों के नीचे, कई वनों के ऊपर तरह-तरह के खेल करते हैं।

राज स्यामाजी साथ सों, खेलत हैं इन बन।
ए जो ठौर कहे सब तुमको, तुम जिन भूलो एक खिन।। १८ ।।

श्री राजश्यामाजी और सखियां इन वनों में खेलती हैं। यह खेलने के ठिकाने सब तुमको बताए हैं। इसलिए, हे मोमिनो! तुम इनको एक क्षण के लिए भी मत भूलना।

धनी कबूं देखें फेर दौड़ते, कबूं बैठ चले सुखपाल।
ए बन जमुनाजीय का, एही बन फिरता ताल।। १९ ।।

यह धनी को देखकर कभी दौड़ते हैं, कभी धनी के सुखपालों को देखकर नीचे चलते हैं। ऐसे यह सुन्दर वृक्ष जमुनाजी को तथा हौज कौसर तालाब को घेरकर आए हैं।

कबूं राज आगूं दौड़त, ताली स्यामाजी को दे।
पीछे साथ सब दौड़त, करत खेल हांसी का ए।। २० ।।

कभी श्री राजजी श्री श्यामाजी को ताली देकर दौड़ते हैं। फिर पीछे सखियां दौड़कर हंसती हैं।

महामत कहे सुनो साथजी, खिन बन छोड़ो जिन।
या मंदिरों संग धनीय के, विलसो रात और दिन।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! इन वनों को एक पल के लिए मत छोड़ो। श्री राजजी महाराज के साथ वन में या मन्दिरों में सदा रात-दिन आनन्द करो।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ९९९ ॥

परिकरमा बड़ी फिराक की

क्यों दियो रे बिछोहा दुलहा, छूटी हक खिलवत।
हम अरवाहें जो अर्स की, फेर कब देखें हक सूरत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे श्री राजजी महाराज! आपने हमें परमधाम से क्यों अलग कर दिया? हम परमधाम की रूहें हैं। हमें फिर कब आपके दर्शन होंगे?

Nijanand App